ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोध–प्रारूप

संकाय–मानविकी

विषय–हिन्दी

शोध का विषयः– समाजशास्त्रीय दृष्टि से नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

शोध–निर्देशक

डॉ0 सुनील कुमार सिंह
सहायक प्राचार्य सह विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
रामाश्रय बालेश्वर महाविद्यालय
दलसिंहसराय, समस्तीपुर, बिहार।

शोधार्थी

प्रभा कुमारी
पैट क्रमांकः 22090315
ग्राम–पो0 खेराजपुर,लहेरियासरा
जिला– दरभंगाा
पिन– 846003

शोध–प्रारूप

शोध का शीर्षक– समाजशास्त्रीय दृष्टि से नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।

1 भूमिका / प्रस्तावना :

साहित्यकार समाज के प्रहरी होते हैं। वे अपने तात्विक एवं नीर–क्षीर विवेकी दृष्टि से समाज की क्रियाकलापों का अवलोकन करते हुए उसकी विद्रूपताओं एवं असंगतियों को प्रकाश में लाकर समाज को सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने की कोशिश करते हैं। साहित्य एवं साहित्यकार का आध्यांत लक्ष्य लोकमंगल एवं जनकल्याण ही होता है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वे सदा प्रयत्नशील रहते है।

साहित्य की विविध विधाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कथा साहित्य रही है। कथा साहित्य के दोनों ही रूप–कहानी एवं उपन्यास अपने आरंभिक काल से ही पाठकों के कंठहार बने हुए हैं। प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य के क्षेत्र में दो महत्वपूर्ण कथाकार नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह ने प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए ग्रामांचल के मार्मिक प्रसंगों को अपनी लेखनी का आधार बनाया है। बाबा नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह दोनों ही हिन्दी जगत के ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने ग्रामांचल की कथावस्तु को अपने कथा साहित्य का आधार बनाया है। नागार्जुन एक समर्थ कवि के रूप में चर्चित रहे हैं, पर उनकी लेखनी का वास्तविक प्रस्फुटन कथा लेखन के साथ हुआ। अमबारी किसान आन्दोलन के दौरान राहुल सांकृत्यायन के साथ जेल जाने के बाद उनके सानिध्य में रहते हुए उन्होंने उपन्यास लेखन की प्रेरणा प्राप्त की। इस प्रेरणा के बाद उन्होंने रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरूण के बेटे, पारो, दुखमोचन, कुंभीपाक, हीरक जयंती, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, गरीब दास आदि उपन्यास के साथ–साथ दर्जनों कहानियों की रचना की। इनके कथाा साहित्य में मिथिलांचल की पृष्ठभूमि उभरकर सामने आयी है। स्त्रीजीवन की समस्या–बाल विवाह , अनमेल विवाह, विधवा समस्या, वृद्ध विवाह आदि, बाढ़ की समस्या, जातिवाद का दुष्प्रभाव , जादू–टोना, धार्मिक आडम्बर, छुआ–छूत, बली प्रथा , वर्ग संघर्ष आदि उनके कथासाहित्य में मार्मिक रूप में चित्रित हुए हैं। अपने उपन्यास रतिनाथ की चाची में एक तरफ जहां उन्होंने विधवा जीवन की समस्या का कारुणिक वर्णन किया है, वहीं दूसरी तरफ बलचनमा में वर्ग संघर्ष की विभीषिका को चित्रित किया है। नई पौध में सामाजिक समस्यों के विरुद्ध युवाओं के संगठित विरोध का वर्णन किया है तो बाबा बटेसरनाथ में नवीन तकनीक के साथ समाज की विविध समस्याओं का चित्रण किया है। वरुण के बेटे में मछुआरा जीवन की त्रासदी की अभिव्यक्ति है तो पारो में अनमेल विवाह की हृदयविदारक स्थिति का चित्रण किया है। दुखमोचन मानवीय भावना की

उत्कृष्टता को प्रस्तुत करता है तो कुंभीपाक में नगरीय जीवन में व्याप्त वैश्यावृत्ति की समस्या को चित्रित किया गया है। हीरक जयंती में राजनीति एवं राजनेताओं की विद्रूप स्थिति को प्रदर्शित किया गया है तो उग्रतारा नारी सशक्तीकरण की वकालत करता है। जमनिया का बाबा में धार्मिक आडम्बर को शोषण के हथियार के रूप में चित्रित किया गया है। इसी तरह बाबा नागार्जुन ने अपनी कहानियों में भी समाज की विविध समस्याओं पर लेखनी चलाकर उसका समाधान प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

शिवप्रसाद सिंह आधुनिक प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने गद्य की कई विधाओं में लेखनी चलाई है, पर उनकी प्रसिद्धि का आधार उनका कथा साहित्य ही है। उन्होंने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश को उसकी संपूर्णता में चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। वे खुद कहते भी हैं– ''मेरी जिन्दगी में गांव ऐसी हकीकत है जिसे मैं चाहकर भी काट नहीं सकता।'' शैलूष, कुहरे में युद्ध, दिल्ली दूर है, वैश्वानर, मंजुशिमा, औरत, अलग–अलग वैतरणी, गली आगे मुड़ती है, नीला चांद आदि उपन्यासों एवं अंधकूप, अमृता, एक यात्रा सतह के नीचे शीर्षक कहानी संग्रहों में गांव की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक आदि तमाम स्थितियों का मार्मिक वर्णन किया है। गरीबी अंधविश्वास, धोखाधरी, छल–प्रपंच, अंधमानसिकता, जादू–टोला आदि का वर्णन उनके कथा साहित्य में भरपूर हुआ है। अलग अलग वैतरणी शीर्षक उपन्यास में एक तरफ जहां उन्हौंने स्वातंत्र्योत्तर भारत के ग्रामीण जीवन की मार्मिक स्थिति को चित्रित किया है तो वहीं दूसरी तरफ गली आगे मुड़ती है में युवाओं के आक्रोश को अभिव्यक्त किया है। नीला चांद में मध्यकालीन काशी की यथार्थ स्थिति का चित्रण किया है तो शैलूष में नटों की मार्मिक दशा का चित्रण है। मंजुशिमा शीर्षक उपन्यास लेखक की आपबीती पर केन्द्रित पुत्री के असामयिक निधन से उत्पन्न त्रासदी की मार्मिकता को व्यक्त करता है। औरत शीर्षक उपन्यास महिलाओं की संघर्ष गाथा को अभिव्यक्त करता है। कुहरे में युद्ध शीर्षक उपन्यास युद्ध की विभीषिका को वर्णित करता है तो दिल्ली दूर है में भारत की तेरहवीं शताब्दी के परिवेश का यथातथ्य चित्रण देखने को मिलता है। वैश्वानर शीर्षक उपन्यास काशी के प्राचीन ऐतिहासिक तथ्य को प्रस्तुत करता है। वहीं अंधकूप, यात्रा सतह के नीचे एवं अेमृता शीर्षक कहानी संग्रह में संकलित कहानियां मानव जीवन के विविध पक्षों को उभारने में सफल रही हैं। कथाकार की संवेदना को रूपायित करने में उनके ग्रामांचल की मुहवरे– लोकोक्तियुक्त भाषा पूर्णतः समर्थ रही है।

दोनो ही कथाकार का कथा साहित्य जनमानस में लोकप्रिय रहा है। उनके कथासाहित्य की अनुभूति एवं संवेदना को और अधिक मूर्तरूप में सामने लाना इस शोध का परम लक्ष्य है। इस शोध के माध्यम से दोनों ही कथाकारों की उन कथाकृति की वारीकी को सहृदय समाज के बीच लाना है, जो अभी तक किसी कारण वश प्रत्यक्षरूप नहीं ले पाया था।

2 प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकताः–

हर कथाकार की संवेदना व समस्याओं के प्रति उनकी समझ अलग–अलग होती है। नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह का कथा साहित्य अपने–अपने परिवेश को पूरी समर्थता के साथ प्रदर्शित करने में समर्थ रहा है। ज्ञान की अभिवृद्धि एवं व्यापक फलक पर साहित्य एवं समाज के प्रति समझ विकसित करने में दो साहित्यकारों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस शोध के माध्यम से नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय आधार पर तुलनात्मक अध्ययन कर उनकी संवेदना की समता एवं विशिष्टता को प्रस्तुत किया जाएगा। दोनों ही कथाकार अपने परिवेश के प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। इस अध्ययन से परिवेश विशेष की समस्या का तुलनात्मक अध्ययन कर मानवीय संवेदना पर पड़नेवाले इसके प्रभाव को प्रस्तुत किया जाएगा। दोनों कथाकारों की संवेदना, सामाजिक चेतना, मानवीय दृष्टि, लेखन पद्धति एवं तात्विक समझ के प्रति पाठकों की सच्ची समझ विकसित करने हेतु प्रस्तावित विषय पर शोधकार्य अपेक्षित है।

3 प्रस्तावित शोध विषय का महत्वः

शोध गूढ़ ज्ञान को प्रकाशवान बनाता है। किसी साहित्यकार की संवेदना को, उनके ज्ञान–भंडार को सहज–सरल रूप में पाठकों के बीच लाना शोध का परम लक्ष्य होता है। इस दृषि से प्रस्तावित शोध विषय भी अपने–आप में महत्वपूर्ण है। इस शोध में हिन्दी के दो महत्वपूर्ण कथाकार– नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के विपुल कथा साहित्य का समाजशस्त्रीय दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। किसी भी चीज का तुलनात्मक अध्ययन सदा से ज्ञान–वृद्धि का आधार रहा है। इस शोध के पूर्ण होने से एक तरफ जहां दोनों कथाकारों के कथा साहित्य का सम्यक रसास्वादन संभव होगा वहीं दूसरी तरफ साहित्यिक ज्ञान का प्रकाश चतुर्दिक फैलेगा ।

4 पूर्वकृत शोध कार्यः

नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य को केन्द्र में रखकर कई शोधार्थियों ने शोध किए हैं, जो इस प्रकार है–

1. उपन्यासकार नागार्जुन और उनकी पात्र योजना' डॉ. प्रमोद कुमार सिन्हा, बी0आर0 ए0 बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, 1972
2. 'नागार्जुन के उपन्यासों में आंचलिक तत्व' डॉ. भगवतस्वरूप, बी0 आर0ए0 आगरा विश्वविद्यालय, 1978
3. नागार्जुन के उपन्यासों का अध्ययन–सामाजिक संदर्भ में, डॉ. बाबूराम गुप्ता, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय 1982

4.हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में नागार्जुन का विशेष अध्ययन, डॉ. मीना राय, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 1983

5.'नागार्जुन के उपन्यासों में समाज दर्शन, डॉ. आशा गौतम, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, 1983

6.नागार्जुन के उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय अध्ययन, डॉ. गोविन्द सिंह वर्मा, बी0 आर0 ए0 आगरा विश्वविद्यालय, 1984

7.नागार्जुन के उपन्यासों में ग्राम, डॉ. शोभा शास्त्री, हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 1984

8.नागार्जुन की उपन्यास कला; डॉ. सीताराम साह, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1984

9.नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष, डॉ. रामवीर सिंह, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, 1985

10.नागार्जुन के उपन्यासों का शास्त्रीय अध्ययन, डॉ. शशिबाला अग्रवाल, चौ0 च0 सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, 1986

11.आंचलिकता के परिप्रेक्ष्य में नागार्जुन के उपन्यासों का अध्ययन, डॉ. हीरालाल गुप्त, मणिपुर विश्वविद्यालय इम्फाल, 1987

12.आंचलिक उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में नागार्जुन, डॉ. हरिश्चन्द्र दीक्षित, कानपुर विश्वविद्यालय, 1998

13.नागार्जुन के उपन्यासों में चरित्र–चित्रण, डॉ. विमलेश कुमार सिंह, राँची विश्वविद्यालय, 1988

14.हिन्दी उपन्यासों में लोकजीवन–नागार्जुन के विशेष संदर्भ में, डॉ. अंजलि सक्सेना, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1988

15.नागार्जुन एवं रेणु के उपन्यासों में प्रतिबिंबित लोक जीवन, डॉ. मोहित ठाकुर, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1990

16.नागार्जुन और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में अभिव्यक्त जन–जीवन का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. उमेश प्रसाद शर्मा, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1991

17.नागार्जुन और फणीश्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. अंजू अग्रवाल, म0 ज्यो0. फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, 1992

18.नागार्जुन के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ. वंदना ठाकुर, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, 1992

19.हिन्दी की आंचलिक परम्परा में फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. रेखा सक्सेना, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, 1992

20.नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित भारतीय समाज, डॉ. गंगाराम शर्मा, हिमाचल प्रदेश, विश्वविद्यालय, शिमला, 1993

21.नागार्जुन के उपन्यासों में ग्राम जीवन, डॉ. शकुन्तला गिरि, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, 1994
22.नागार्जुन के उपन्यासों में युगीन चेतना, डॉ. टी.पी. प्रभु, बंगलोर विश्वविद्यालय, 1997
23.नागार्जुन और उनके उपन्यास, डॉ. भृगु प्रसाद, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, 2000
24.प्रगतिवाद और नागार्जुन के उपन्यास, डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता, प्रथम संस्करण–2006
25.नागार्जुन के उपन्यासों में लोकजीवन, डॉ. सुमित्रा, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, 2007
26.नागार्जुन का उपन्यास साहित्यः समसामयिक संदर्भ, डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, 2011
27.नागार्जुन के उपन्यासों में वर्णित संघर्श चेतना, विश्वविजय सिंह, राँची विश्वविद्यालय, राँची, 2013
28 नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, डॉ0 सुनील कुमार सिंह, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर 2015
29 शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासें में सामाजिक यथार्थ, किरणदीप सिंह, पंजाबी विश्वविद्यालय 2019
30 शिव प्रसाद सिंह के कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ, दीवान सिंह, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला 1996
31 डॉ0 शिव प्रसाद सिंह का कथा साहित्यः संवेदना एवं शिल्प अमित अवस्थी, छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 2005
32 शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासें में जीवन दर्शन, श्रद्धा द्विवेदी, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी 2013
33 शिवप्रसाद सिंह के ऐतिहासिक उपन्यास, जटाशंकर सिंह, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी 2021
34 शिव प्रसाद सिंह के कथा साहित्य में समाजिक चेतना, संतोष कुमार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 2021
35 डॉ0 शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में युग चेतना, बलजीत सिंह, भी 0 बी0 एस0 पूर्वांचल

विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2000

36 शिव प्रसाद सिंह की कहानियों में ग्रामीण संस्कृति एवं आधुनिकता बोध, संपूर्णानंद मिश्रा, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वद्यिालय, फैजाबाद, 2010

37 सिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों का सामाजशास्त्रीय अध्ययन निशा भादौरिया, छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 2002

38 शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना, संजय कुमार सिंह , वीर बहादुर सिंह पूर्वांच विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2017

उपर्युकत अध्ययनों के अतिरिक्त भी नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य पर शोधकार्य एवं समीक्षात्मक पुस्तक लिखे गए होंगे। उपर्युक्त शीर्षकों के अध्ययन से पता चलता है कि दोनों ही कथाकारों के कथा साहित्य के विविध पहलुओं पर शोध कार्य किए गए हैं। नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर मेरी जानकारी में अभी तक शोधकार्य नहीं हुए हैं। अतः प्रस्तुत विषय पर शोधकार्य करना समीचीन एवं सार्थक होगा।

5 शोध के आधार ग्रथों की सूची–

प्रस्तावित शोध हेतु आधार ग्रंथ के रूप में नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह द्वारा रचित कथा साहित्य को लिया जाएगा, जिसकी सूची निम्नवत है–

1. नागार्जुन; नागार्जुन रचनावाली, भाग–4, संपादक– शोभाकान्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पहली आवृत्ति– 2011,
   - I. रतिनाथ की चाची (1948)
   - II. बलचनमा (1952)
   - III. नई पौध (1953)
   - IV. बाबा बटेसर नाथ (1954)
   - V. वरूण के बेटे (1956)
   - VI. पारो (1975)
2. नागार्जुन, नागार्जुन रचनावली भाग–5, संपादक –शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति–2011
   - I. दुखमोचन (1957)
   - II. कुंभीपाक (1960)

III. हीरक जयंती (1961)
IV. उग्रतारा (1963)
V. जमनिया का बाबा (1967)
VI. गरीब दास (1979)
VII. अप्रकाशित अधूरा उपन्यास (1971)

3. नागार्जुन, रतिनाथ की चाची, राजकमल पेपरवैक्स, नई दिल्ली–2011
4. नागार्जुन, बलचनमा, किताब महल एजेन्सीज, अशोक राजपथ पटना, ग्यारहवां, संस्करण–2004
5. नागार्जुन, कुम्भीपाक, राजकमल पेपरवैक्स, तीसरा संस्करण–2011
6. नागार्जुन, नागार्जुन रचनावली भाग–6, संपादक – शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति–2011
7. शैलूष, डॉ0 शिवप्रसाद सिंह नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, प्र0 सं0 1989
8. कुहरे में युद्ध, डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण 1995
9. दिल्ली दूर है, डॉ शिवप्रसाद सिंह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995
10. वैश्वानर, डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996
11. मंजुशिमा डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1997
12. औरत, डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, राजपाल ऐंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण 1999
13. अलग–अलग वैतरणी, डॉ0 शिप्रसाद सिंह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण 2000
14. गली आगे मुड़ती है, डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली चौथी आवृत्ति 2000
15. नीला चांद, डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली तृतीय संस्करण 2000
16. अंधकूप (संपूर्ण कहानियां) डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973
17. अमृता (संपूर्ण कहानियां) डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली दूसरा संस्करण 1998
18. एक यात्रा सतह के नीचे (संपूर्ण कहानियां) डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 1998

6 प्रस्तावित शोध विषय की परिकल्पनाः

प्रस्तावित शोध विषय के तहत नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। इस शोध से दोनो कथाकारों का मौलिक चिंतन एकसाथ सामने आएगा। साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन ज्ञानवृद्धि हेतु कितना आवश्यक है, यह स्पष्ट हो पाएगा। आलोच्य कथाकारों के कथा साहित्य की मार्मिकता से रू–ब–रू होना आसान हो जाएगा। साहित्य के परम लक्ष्य की प्राप्ति में सकारात्मक भूमिका अदा करेगा।

7 शोध–प्रविधिः–

किसी भी शोध ग्रंथ को मूर्तरूप देने के लिए अनेक कार्यविधियों का प्रयोग किया जाता है। ये शोध–प्रविधियां शोधकर्त्ताओं को अपने लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करती है। शोधार्थी आवश्यकतानुसार विविध शोध–प्रविधियों का उपयोग अपने शोधकार्य में करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुंचता है। प्रस्तुत शोध के दौरान आवश्यकतानुसार व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक, आगमन–निगमन, समीक्षात्मक, साक्षात्कार आदि विधि का उपयोग किया जाएगा।

8 शोध अध्याय का विभाजनः–

प्रथम अध्याय– 1 समाजशास्त्रीय अध्ययनः अभिप्राय एवं आवश्यकता

2 तुलनात्मक शोधः अभिप्राय एवं आवश्यकता

द्वितीय अध्यायः– नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन

तृतीय अध्यायः– कथावस्तु की दृष्टि से नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का तुलनात्मक विवेचन

चर्तुथ अध्यायः– नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में निहित विविध सामाजिक समस्याओं का तुलनात्मक विवेचन

पंचम अध्यायः– नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में जीवन मूल्य

षष्ठ अध्यायः– आंचलिकता की दृष्टि से नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों का विवेचन

सप्तम अध्यायः– नागार्जुन एवं शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का शिल्पगत विवेचन

निष्कर्ष

9 प्रस्तावित शोध विषय की संदर्भ सूचीः–

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. वाजपेयी,प्रकाश, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास, नंदकिशोर एण्ड संस, चौक, वाराणसी–1,प्रथम संस्करण–1964,
2. गुप्त, डॉ. गणपतिचन्द्र, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, भारतेन्दु भवन, चंडीगढ़–2, 1965
3. वर्मा, डॉ. कान्ति, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, रामचन्द्र एण्ड कम्पनी, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1966,
4. अग्रवाल,विन्दु, हिन्दी उपन्यास में नारी चरित्र, राधा–कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1968
5. द्विवेदी, डॉ. मुकुन्द, हिन्दी उपन्यासः युग चेतना और पाठकीय संवेदना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1970
6. सक्सेना, डॉ. आदर्श, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर,प्रथम संस्करण–1971,
7. मधुप,घन याम, हिन्दी लघु उपन्यास, राधाकृश्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–1971
8. दुबे, डॉ. पुरूशोत्तम, व्यक्ति चेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, अनुपम प्रकाशन, बम्बई – 1973
9. सिंह, डॉ. कुँवरपाल, हिन्दी उपन्यास–सामाजिक चेतना, पाडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–1976,
10. जैन, डॉ. नगीना, आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास, अक्षर प्रकाशन, पा. लि. दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1976,
11. गुप्त, डॉ. बालकृष्ण, हिन्दी उपन्याासः सामाजिक संदर्भ, अभिलाशा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–1978
12. त्यागी, डॉ. सुमित्रा, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन, साहित्य–प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1978
13. कडवे, डॉ. ह0 के0, हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति, अन्नपूर्णा प्रकाशन, गाँधीनगर कानपुर, प्रकाशन वर्शे–1978
14. गुप्ता, डॉ. कमला, हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद, अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1979
15. मिश्र, डॉ. रामदरश, हिन्दी उपन्यासः एक अंतयात्रा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन–1980

16. रेणु, फणीश्वर नाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, बारहवीं आवृत्ति,1982
17. सिह, विजय बहादुर, नागार्जुन का रचना–संसार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1982,
18. सिंह, डॉ. रामवीर, नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष, धरती प्रकाशन, बीकानेर, राजस्थान, प्रथम संस्करण–1985
19. गुप्ता, एम. एल. एवं भार्मा, डी. डी. समाजशास्त्र, प्रकाशक–साहित्य भवन, आगरा प्रथम प्रकाशन–1993
20. डॉ. प्रणव, नागार्जुन की सामाजिक चेतना, यात्री प्रकाशन, दिल्ली–1995
21. गुप्त, डॉ. भाान्तिस्वरूप, साहित्यिक निबंध संग्रह, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, नवीन संस्करण 1999,
22. राय, प्रो. गोपाल, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2002
23. गुप्ता, डॉ. कृष्ण कुमार, प्रगतिवाद और नागार्जुन के उपन्यास, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली, प्रथम संस्करणः2006,
24. सिंह,बच्चन, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संशोधित संस्करण–2007,

पत्र–पत्रिकाएं

- आजकल, जून–1996
- उद्भावना, नागार्जुन अंक, नवम्बर–199
- समय सुरभि, नागार्जुन अंक, अप्रैल–2000
- आजकल, नागार्जुन जन्मशती विशेषांक, जून–2011
- नया पथ, नागार्जुन विशेषांक जनवरी–जून (संयुक्तांक)–2011

शोध निर्देशक का हस्ताक्षर शोधार्थी का हस्ताक्षर